शोध मंथन Vol. XIII No.I Jan.-Mar.2022 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.783 (SJIF)

भारत में गंगा–यमुना एवं सरस्वती नदियों का महत्व

राधू पंवार
शोधार्थी
बी०एस०एम० (पी०जी०) कॉलेज
रुड़की, उत्तराखण्ड
ईमेलः *kesharmaan82@gmail.com*

प्राप्तिः 15.02.2022
स्वीकृतः 16.03.2022

प्रो० (डॉ०) गौतम वीर
प्राचार्य
बी०एस०एम० पी०जी० कॉलेज
रुड़की, उत्तराखण्ड
ईमेलः *gautamveer@rediffmail.com*

सारांश

यह सर्वविदित सारांश तथ्य है कि नदियाँ गंगा–यमुना व सरस्वती अपने उद्‌भव काल से ही मानव के लिए लाभप्रद रही हैं। सभ्यता विकास के प्रारम्भ से ऋग्वेद में वर्णित नदियाँ ममतामयी माँ की तरह शरणदात्री के रूप में अस्तित्व में रही हैं। तीनों ही नदियों का स्वरूप निरंतर जनकल्याणकारी ही रहा है। जिसके कारण भौगोलिक रूप से ऊपर उठकर सम्पूर्ण जनमानस के हृदय में स्थान पा सकी। अपने महतीय गुणधर्मों के कारण ही भारतीय संस्कृति में पवित्रता, निर्मलता, अविरलता, विद्धता, ममता आदि का पर्याय बनी हुई हैं। विश्व–इतिहास इस बात का साक्षी है कि समग्र संसार की सभ्य जातियों के आदिम इतिहास में कृषि प्रधान नदियों में देवत्व की कल्पना की गयी है। भारत निर्माण में नदियों का योगदान महत्वपूर्ण रहा है।

विश्व की प्राचीन संस्कृतियों में भारत का महत्वपूर्ण स्थान है। हमारी ऋग्वैदिक संस्कृति सम्पूर्ण विश्व समाज की पथ प्रदर्शक रही है। भारत का धर्म, ज्ञान, दर्शन, आचार–विचार एवं समाज व्यवस्था दिशाहीन विश्व के लिए एक अनुकरणीय मानदण्ड बना रहा। इसलिए मनुस्मृति में भगवान मनु ने कहा–

एतद्‌देशसूतस्य समाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन्, प्रथिव्यां सर्वमानवाः।।

भारतीय संस्कृति का विकास सप्तसैन्धव प्रदेश में हुआ और विकास के अगले चरण में यह संस्कृति पूर्व दिशा में सदानीरा (गण्डकी) नदी तक और दक्षिण दिशा में सागर पर्यन्त विकसित हुई। इतना ही नहीं बल्कि राजसत्ता की स्थापना और विकास के साथ ही साथ यह संस्कृति भी दिग्विजयी नरेशो के साथ सिंहल दीप, यवद्धीप, सुवर्णभूमि तथा अफगानिस्तान आदि तक प्रभावी हो गई।

भारतीय संस्कृति के निर्माण में, गवेषणात्मक दृष्टि से देखा जाए तो नागराज हिमालय तथा गंगा–यमुना–सरस्वती नदियों का महान् योगदान है। भारतीय परम्परा में हिमालय देवात्मा है तो उपर्युक्त भी मानवमात्र का उद्धार करने के लिए स्वर्ग से उतरी देव नदियाँ है। इन्हें सुरसिन्धु, सिद्धसिन्धु विवुधापगा, त्रिपथगा तथा विष्णुप्रिया–विष्णुपदी आदि नामों से सम्बोधित किया किया गया है। यदि हिमालय की शान्त, सुस्थिर, अनाहत कन्दराओं ने अतीनिन्द्रय ज्ञान की साधना के लिए उपर्युक्त स्थान दिया है तो इन पवित्र नदियों का जल अपनी दैवी शुचिता तथा अपने औषधीय गुणों से साधकों एवं भक्तों को शारीरिक ऊर्जा प्रदान करती है और इन नदी–तटों पर स्थापित विविध

तीर्थों तथा ऋषियों–मुनियों की तप स्थलियों ने भारतीय जनता की आयुष्मिक आस्था को उत्तरोत्तर सुदृढ़ बनाया है। विवेच्य तीनों ही नदियों का स्वरूप निरंतर जनकल्याण ही रहा है, जिसके कारण नदियाँ भौगोलिक रूप से ऊपर उठकर सम्पूर्ण भारतीय जनमानस के हृदय में स्थान पा सकी।

यद्यपि सरस्वती नदी आज अस्तित्व में नहीं है किन्तु ऋग्वेद में इनसे सम्बन्धित उद्धरण एवं सिन्धु घाटी सभ्यता की खुदायी यह सिद्ध कर चुकी है कि सरस्वती कभी गंगा व यमुना की ही भांति दिव्य नदी हुआ करती थी। नदियां अपने दिव्य आकार, उपयोगिता, पदार्थ दृष्टि एवं समग्र कल्याणता के कारण ही भारतीय समाज में माँ का स्थान प्राप्त कर चुकी है। प्रारम्भ से ही विवेच्य नदियाँ भारतीय कृषि, पशुपालन, व्यापार, उद्योग राज्यों के राजनीतिक सम्बन्धों आदि में उपयोगी रही है एवं देश को विकसित व आत्मनिर्भर बनाने में अधिकाधिक योगदान दिया है।

भारत में प्राचीन काल से ही तीनों नदियों को पवित्रता का प्रतीक माना जाता रहा है। नदी सरस्वती पूरे राष्ट्र की 'विद्या की देवी' के रूप में स्वीकार्य है तो गंङ्गा पूरे राष्ट्र की 'पवित्र नदी' के रूप में मान्य है। यही कारण है कि गंङ्गा कभी महर्षि जह्नु की कन्या बनती है तो कभी हस्तिनापुर नरेश शान्तनु की प्राणप्रिया और कभी भीष्म की जन्मदात्री माँ। उसी प्रकार नदी यमुना भी कभी भगवान सूर्य की पुत्री अर्थात् यमानुजा और कभी कृष्ण की पत्नी अर्थात् कृष्णाप्रिया का रूप धारण करने वाली है। इसी प्रकार नदी सरस्वती भी अनेक मानवीय रूप धारण करने वाली देवी के रूप में ख्यात है। ये भी कभी विधा–वाणी की देवी तो कभी ब्रह्य की पत्नी या पुत्री के रूप में और कभी भगवान् विष्णु की पत्नी के रूप में ख्यात है। इस प्रकार तीनों नदियाँ अपने भौगोलिक रूप में आर्थिक दृष्टि से लोकोपयोगी होने के साथ–साथ आराध्य देवों के साथ अपने सम्बन्धों के कारण धार्मिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से भी जनहृदय में वास करती है। यह एक सुखद आश्यर्चकारी है कि भारतभूमि में ऐसी क्या विशेषता है कि श्रेष्ठ देवयोनि के देवतागण भी इस भारत भूमि पर जन्म लेने को आतुर रहते है। अनेकानेक कारणों से यह ज्यादा स्वीकार योग्य दिखता है कि पतितपावनी व कलिमलहारिणी नदी गंङ्गा इस देश की मिट्टी को पवित्र करती है। संस्कृति के आरम्भ से ही गंङ्गा नदी अपने औषधभूत अमृतढाल से लाभ देती रही है एवं इसका दर्शन, स्पर्श, स्नान, पान, मात्र से मनुष्य जन्म मरण के बन्धनों से मुक्ति पा लेता है। महाभारत में भी वर्णित है कि–

पुनाति कीर्तिता पांप दृष्ट्वा भद्रं प्रयच्छति।
अवगाढ़ा च पीता च पुनाति सप्तम् कुलम्।।

अर्थात् गंङ्गा अपने नामोच्चारण करने वाले व्यक्ति के पापों का नाश करती है, दर्शन करने वालों का कल्याण करती है तथा स्नान–पान करने वालों की सात पीढ़ियों तक को पवित्र कर देती है।

भारतीय संस्कृति एवं परम्परा में इनके जल को देव स्वरूप मानकर उसकी पूजा अर्चना की जाती है। गंगा–यमुना नदियों में स्नान कर हम अपने को भाग्यशाली मानते हैं। इन परम पवित्र एवं कल्याणमयी नदियों का आध्यात्मिक तथा लोकोप्रयोगी स्वरूप, भारतीय भूमि पर निवास करने वाले हर एक व्यक्ति के हृदय में गहरी छाप रखता है। प्रत्येक श्रद्धालु की यह इच्छा रहती है कि वह अपने जीवनकाल में एक बार स्नान करके अधिक से अधिक पुण्य संचय करे। आज वर्जनाहीन समाज और निरंतर पतनोन्मुखी जीवन शैली में भले ही सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्य बदल गये हो, पर हमारी प्राचीन संस्कृति में नदियों, तालाबों, पोखरों में मल–मूत्र विसर्जन की तो कल्पना भी नहीं की जा सकती है। मनुस्मृति में कहा गया है कि–

''नाप्सु मूत्रं वाष्टोवनं समुत्सुजेत।
अयेध्यलिप्तमन्याद्धा लोहितं वा विशाणि वा।''

अर्थात् 'जल में मल–मूत्र, थूक अथवा अन्य दूषित पदार्थ, रक्त आदि का विसर्जन नहीं करना चाहिए। इसी प्रकार पावन–पवित्र गंगा के संबंध में कहा गया है कि– '' गंगा तव दर्शनार्थ मुक्तिः' अर्थात् गंगा के दर्शन मात्र से ही मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है।' नदियाँ जीवन एवं संस्कृति के आधार–अन्न, पेयजल, कृषि, पशुपालन इत्यादि के लिए प्राण स्वरूप है। वर्तमान में इन पर बड़े–बड़े बाँध, सिंचाई हेतु नहरें, पेयजल एवं विद्युत परियोजनायें, औद्योगिक इकाइयों के लिए जल प्राप्ति हेतु इनका उपयोग आदि ऐसे अनेकानेक कार्य संचालित किये जा रहे है, जिनके अभाव में लोकहित के कल्याण की बात सोची नहीं जा सकती। इन्हीं बातों को और प्रभावी बनाने के लिए भारत की कई छोटी–बड़ी नदियों को जोड़कर उनके जल का सर्वश्रेष्ठ उपयोग करने की बात सोची जा रही है। इस योजना को 'राष्ट्रीय जल ग्रिड' नाम दिया गया है। इस योजना का मुख्य उद्देश्य जल के अन्तर्बेसिन अन्तरण द्वारा वितरण में प्रादेशिक विषमता को दूर करना है।

नदियाँ आर्थिक दृष्टि से बहुउपयोगी रही है। प्रारम्भिक नदी सरस्वती तदन्तर गंगा व यमुना की घाटियों में ही सभ्यताओं की जन बसावट प्रारम्भ हुई। इनके किनारे के अपवाह क्षेत्रीय विशाल मैदानों में कृषि एवं पशुपालन को सम्भव बनाया। नदियों की जलराशि के अन्दर विशाल समुद्री–उत्पाद की प्राप्ति तो सम्भव होती है, उपयोगी खनिज पदार्थों व औषधि तत्वों की प्राप्ति भी प्रचुरता में होती रही है। नदियाँ विश्वव्यापी खाद्यान्न संकट को भी कुछ हद तक हल करती है। यह भी विद्धित तथ्य है कि सड़कों एवं रेल मार्ग का विकास न होने एवं वायुयान की खोज होने तक जल परिवहन प्राचीन काल से आधुनिक समय तक सर्वाधिक महत्वपूर्ण परिवहन रहा है।

प्राचीन सभ्यतायें पूरे विश्व में नदियों के किनारें की घाटियो में ही बसना प्रारम्भ हुई। भारत की प्राचीनतम सभ्यता सिन्धु घाटी की सभ्यता थी जो सिन्धु घाटी के किनारे बसी होने के कारण सिन्धु घाटी की सभ्यता के नाम से जानी गयी। वस्तुतः नदियों की घाटी में जल की सुलभ उपलब्धता मनुष्य के साथ–साथ सहचर जानवरों के लिए भी उपयोगी थी एवं नदी के किनारे की नमी जमीन पर पाषाण व प्रारम्भिक औजारों के प्रयोग से कृषि कार्य भी संभव था। पशुपालन से लेकर कृषि कार्य नदी घाटियों में ही संभव था। साथ ही समुद्री व्यापार व परिवहन भी नदियों के कारण सुगम था। साथ ही इनमें खाद्य सामग्री यथा मछली, समुद्री जीव व फल आदि भी उपलब्ध होती थी।

नदियों के किनारे राजनीतिक नगरों के साथ–साथ बड़े–बड़े व्यवसायिक केन्द्र भी शुरू से ही बसते रहे है। इनके किनारे बसे वृहद् धार्मिक तीर्थ इन नदियों की धार्मिक महत्ता व स्वीकार्यता सिद्ध करते हैं। गंगा नदी के किनारे बसे हरिद्वार, कानपुर, प्रयाग (इलाहाबाद) व काशी (वाराणसी) और यमुना नदी के किनारे बसे दिल्ली, आगरा, मथुरा आदि शहर इसके प्रमाण है। नदी के किनारे के विशाल धार्मिक तीर्थ मानव के धार्मिक एवं आध्यात्मिक जीवन के समस्त क्षेत्रों को प्रभावित करते है। धर्म–संरक्षण के परिप्रेक्ष्य में धर्म के दो रूप दिखते है– प्रथम धर्म अर्थात् धारण योग्य गुणकर्म। प्रचलित व्यवहारिक स्वरूप से स्पष्ट है कि नदियाँ गंगा व यमुना भारतीय जनमानस विशेषकर हिन्दू मानस के अनगिनत धार्मिक व्यवहारों को सम्पन्न करती है, जन्म से मृत्यु तक के अनेक संस्कार इन नदियों के तटों पर बसे पवित्र नगरों में सम्पन्न होते हैं। प्रयाग (इलाहाबाद) के त्रिवेणी (गंगा, यमुना व अदृश्य सरस्वती नदी) संगम पर प्रतिवर्ष माघ मास में लगने वाला माघ मेला, छः वर्ष पर लगने

वाला अर्द्धकुम्भ, बारह वर्ष पर ही हरिद्वार में लगने वाला महाकुम्भ न केवल धर्म संरक्षण का सर्वाधिक बड़ा उत्सव है, अपितु विवेच्य नदी गंगा के प्रति आस्था व दिव्यत्व में वृद्धि करता है। धर्म के द्वितीय रूप को देखें तो इस अर्थ में जिन्हें धारण किया जा सके, वही धर्म है।

व्यक्तिगत मानव संस्कारों को नियमित करने के साथ–साथ सामाजिक संस्कारों के निर्माण में भी नदियों का अमूल्य योगदान है। भारतीय संस्कृति में 'अनेकता में एकता' रूपी मूल भाव को अक्षुण्य रखने व संवर्धित करने में विवेच्य नदियों का सर्वाधिक योगदान रहा है। विशाल भारतभूमि की एकता के बन्धन में बांधे रखने में भी नदियों का योगदान रहा है। इस प्रकार धर्म के व्यवहारिक व तात्विक दोनों ही पक्षों के वृहद् संरक्षण को नदियों ने सुनिश्चित किया है। तीनों नदियां नदी रूप के साथ–साथ अपनी वृहद् उपयोगिता व लाभप्रदता के कारण मानवीय व दैवीय चेतना रूप में भी प्रारम्भ से स्वीकार्य रही हैं। जो मानव, पशु व वनस्पति सभी के लिए समान रूप में उपयोगी है। अनादि काल से अपने इन्हीं गुणधर्मों के कारण नदियाँ पवित्रता का भाव जगाते हुए मानव मन में स्थान पा सकी है एवं जाति, धर्म, लिंग, वर्ण, क्षेत्र आदि सीमाओं से ऊपर उठकर समग्र भारत भूमि को एकता के सूत्र में एकीकृत कर रही है। नदियों की धार्मिक व आध्यात्मिक महत्ता भी निर्विवाद है। भारत भूमि देवताओं के लिए भी स्पृहणीय रही है। विष्णु पुराण के अनुसार स्वर्ग के देवता भी यह गीत गाते हैं कि–

गायन्ति देवाः किलगीतकानि।
धन्यास्तु ये भारत भूमिभागे।।

अर्थात्– ''भारत भूमि में जन्म लेने वाले व्यक्ति धन्य है।'' इनकी उपयोगिता महत्व व कल्याणता के साथ–साथ इनके प्रति जनमानस की आस्था व विश्वास को भी सिद्ध करता है।

सन्दर्भ

1. (1924). अथर्ववेद संहिताः रौथ और हिटनी संस्करण, बर्लिन।
2. (1965). उत्तर वैदिक समाज और संस्कृतिः राय विजय बहादुर, इलाहाबाद।
3. (1949). ऋग्वेद संहिताः मैक्समूलर संस्करण, लन्दन।
4. (2004). गंगा की कहानीः शंकर बाम ज्ञान गंगा प्रकाशन, दिल्ली।
5. शास्त्री, श्री रामप्रताप त्रिपाठी. (1995). पुराण में गंगाः द्वितीय संस्करण, प्रकाशक–हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।
6. राय, नारायण सिद्धेश्वरी. (1968). पौराणिक धर्म एवं समाजः पंचनन्द पब्लिकेशन, इलाहाबाद।
7. कौशाम्बी, डी.डी. (1963). प्राचीन भारत की संस्कृति और सभ्यताः जबलपुर।
8. ब्रह्मपुराणः गीताप्रेस, गोरखपुर (उत्तर प्रदेश)।
9. बाम, शंकर. (2002). यमुना की कहानीः ज्ञान गङ्गा प्रकाशन दिल्ली।
10. महाभारतः हिन्दी अनुवाद संहिता, गीता प्रेस, गोरखपुर सम्वत् 12012–2026.
11. (2003). कुरूक्षेत्रः जून, पृष्ठ **08.**
12. (2004). कुरूक्षेत्रः जून, पृष्ठ **17.**
13. (1997). योजनाः अगस्त, पृष्ठ **78.**